प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का परिचय उसके साहित्य से उपलब्ध होता है । साहित्य किसी भी देश के समाज,संस्कृति एवं सभ्यता का अभिन्न अंग होता है। साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है, 1. शिष्ट साहित्य और 2. लोकसाहित्य । शिष्ट साहित्य के मुख्यत: दो रूप हैं 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य। लोकसाहित्य को भी शिष्ट साहित्य कि भांति विभाजित किया जा सकता है किंतु लोकसाहित्य मुख्यत: गेय रूप में प्राप्त होता है, अत: लोकसाहित्य को विद्वानों ने कला एवं संस्कृति के मानदण्डों के आधार पर पाँच भागों में बाँटा है । लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोकोत्तियाँ या लोकसुभाषित आदि । लोकसाहित्य मौखिक रूप में अधिक प्राप्त होता है । लोकसाहित्य का मौखिक रूप में उपलब्ध होना उसकी प्रधानता है । समाज इसकी उपलब्धि तब से है जब से मनुष्य ने धरती पर जन्म लिया है। मानव की प्रवृत्ति रही है मनोरंजन हेतु गीत या किस्सागोई को अपना सहारा बनाना । हम लोकसाहित्य को समय सीमा में नहीं बांध सकते क्योंकि प्रचलित लोकगीत, लोक कथा, लोकगाथा, आदि के प्रेरणा श्रोत तो भगवान ही है । वैदिक काल के ग्रंथों, पुराणों से प्राप्त ज्ञान को अर्जित कर लोक मानव ने इस लोक साहित्य का सृजन किया है इस विषय में डो. दिनेश्वर प्रसाद ने लिखा है- "लोककहानियों की मुख्य विशेषता उसकी सुखान्तता है । आज भारत के विभिन्न प्रदेशों से जो लोक साहित्य प्राप्त हो रहा है, वह सदैव एकसा नहीं रहा होग समय दर समय उसमें भी विकासशील परिवर्तन आया है। मध्ययुग में ऐतिहासिक लोकनायकों और वीरों की जो कहानियाँ आज प्रचलित है उनसे पहले नहीं रची गयी होंगी शायद"। लोकसाहित्य समाज में आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन समय में था।

लोकसाहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। आमजनता जिस भाषा एवं बोली में अपने ह्रदय की भावाभिव्यक्ति से हर्षोल्लास, वेदना, चेतना, व्यक्त करता है वह लोकसाहित्य से है। जन्म से लेकर मृत्यु

तक मानव जिन षोडश(सोलह) संस्कारों का निवार्ह करता चला आया है। वे प्राय: हमारे ऋषि-मुनियों की देन है। वैदिक काल से आज तक हम इन सभी रीति-रिवाजों का निर्वहन कर रहे हैं। लोकसाहित्य का समूचा अस्तित्व मानव की संस्कृति एवं संस्कार के वृत में समाहित है। विविध धार्मिकोत्सव, तीज-त्यौहार में लोकमानव लोकगीत के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को सजीव बनाए हुए है। जन्म के समय सोहर के गीत, मुण्डन के गीत, छोछक गीत आदि गाये जाते है, ऋतु-गीत में बारहमासा के गीत में प्रकृति के आधार पर चैत से फागुन तक के लोकगीत, श्रमिक गीत में खेती के समय बोवाई, निराई, कटाई आदि के गीत गाकर ग्रामीण मानव अपने कार्यभार से बिसराव करते हैं। लोकगीत आमजन समुदाय के हर्ष उल्लास की अनुभूति से परिपूर्ण हैं। किस्सागोई हमें हमारे पूर्वजों से विरासत मिली है। दादी-नानी की कहानियाँ, गाँव में बड़े-बूढ़े शीत ऋतु की कड़ाके की ठंड में अलाव जला कर लोककहानियाँ सुनाया करते है। गाँव में मेले में नट तमाशे नाटक जैसे लोकनाट्य आज भी खेले जाते हैं। लोकभाषा में दैनिक व्यवहार में कई बार मुहावरे कहावतों का प्रयोग देखने को मिलता है। लोकगाथा में भारतवर्ष के वीरों की गाथा उल्लेख भी मिलता है। लोकसाहित्य यह मानव के जन्म से मृत्यु तक लोकसंस्कृति के साथ अटुट संबंध है, हर स्त्री,पुरुष,बालक,जवान,वृध्द सभी लोगों की सम्मिलित पूँजी है संपत्ति है, तथा जिसके संरक्षण का दायित्त्व हमारा है।

आधुनिक युग में लोकसाहित्य के लुप्त होते अस्तित्त्व पर प्राचार्य बापूराव देसाई जी का कथन है कि- "आज के युगीन संदर्भ और जीवन प्रणाली में व्यापक मात्रा में तबदील होने की वजह से लोकबोलियों के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया हैं। और लोकसाहित्य अब शायद अतीत की वस्तु बनती जा रही है, लोकसाहित्य को विस्मृत होने से बचाने के लिए उसे शब्दबद्ध कर, भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना अनिवार्य हो गया है।"

साहित्य समाज का दर्पण है ठीक उसी प्रकार लोकसाहित्य आम जनता के हृदय का दर्पण है। लोकसाहित्य आमजनता का वह साहित्य है,जिस साहित्य के माध्यम से आम जन समुदाय खुद को आनंदित कर अपने जीवन को सुख समृद्ध बनाने का प्रयास करता है। लोक साहित्य का सीधा संबंध

सीधे सच्चे लोकमानव से है जो किसी भी तरह के प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करता यह मौखिक साहित्य है। अत: यह कह सकते है कि जब से पृथ्वी पर मानव ने जन्म लिया है तभी से लोक साहित्य का उद्भव उसके साथ ही हुआ है। लोक साहित्य सदियों से मौखिक परंपरा का अनुसरण करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता चला आया है। कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक साहित्यिक विधाओं का बहुत ही बारीकि के साथ अध्ययन किया है। वे कहते है- "चिरकाल से अर्जित ज्ञान राशि का नाम साहित्य है। जो साहित्य साधारण जनता से संबंध रखता है उसे 'लोक साहित्य' कहते हैं। जिस प्रकार साधारण जनता का जीवन नागरिक जीवन से भिन्न होता है उसी प्रकार उनका साहित्य भी आदर्श साहित्य से पृथक होता है"। लोक साहित्य को साहित्यिक रूप देने तथा लोक संस्कृति को संझो ने का श्रेय डॉ. सत्येंद्र, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, मोहनलाल मधुकर, श्याम परमार, डॉ.कन्हैयालाल सहगल, डॉ. सूर्य किरण पारीख, रामनरेश त्रिपाठी आदि साहित्यजीवीयों को जाता है।

लोकगीतों में मुख्यतः महिलाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आमजन जब किसी अवसर पर आनंदमय होकर लहरा के गा उठे तब वह लोकगीत कहलाता है। ब्रज लोकगीतों की विविधता और बहुलता क प्रमाण बहुत अधिक है। लोकजीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो ब्रज लोकगीतों की परीधि में न आया हो। ब्रज लोकगीतों में संस्कार गीत, तीज-त्यौहार के गीत,शादी-ब्याह के गीत, ऋतु संबंधी गीत, कृषि संबंधित गीत, श्रम गीत,देवी-देवताओं के गीत आदि का समावेश किया जाता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक गीतों में समाज सुधारक गीत भी प्राप्त होते हैं, जिनमें पर्यावरण सुधार और संरक्षण, परिवार नियोजन, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, देश-प्रेम, नारी जागृति, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर प्रचूर मात्रा में लोकगीत प्राप्त होते हैं।

जीवन में किसी भी कार्य पीछे उद्देश्य का होना बेहद जरूरी है बिना उद्देश्य किया जाने वाला कार्य निर्रथक है। लोकसाहित्य मौखिक साहित्य है। यह वाचिक परंपरा से संबंधित है अत: मौखिक साहित्य का संकलन कार्य जटिल है। आधुनिक युग में हिंदी गद्य एवं पद्य में नारी विमर्श पर काफी कार्य हो चुका है। विश्वविद्यालायों में लोक साहित्य के प्रति भारी उदासीनता देखने को मिली है। नये विषय

और नवीन तथ्यों के आंकलन पर लोकसाहित्य खरा नहीं उतरता ऐसी विचारधारा के कारण लोक साहित्य को कम आंका जाता है। मेरा उद्देश्य ऐसी विचारधारा का खंडन करना है। लोकगीत आज भी अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध करते हैं।

नारी की पीड़ा, वेदना, शोषण आदि को लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया है। श्रमिक गीतों के अंतर्गत नारी ने खेतों में काम करते समय एवं चक्की चलाते समय, गीतों के माध्यम से अपनी पीड़ा को व्यक्त करती है इन गीतों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से चेतना का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त दु:ख-सुख, विरह वेदना,आदि भावों को इन लोकगीतों में दर्शाया गया है जहाँ वेदना भी है और चेतना भी। नारी उत्पीड़न की दशा सदियों से स्थिर है। महिलाएं घरेलू हिंसा, असमानता, शारीरिक एवं मानसिक शोषण का शिकार होती है। आज हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं लेकिन समाज में आज भी नारी की दशा जैसी थी वैसी ही बनी हुई है। महिलाएं हर घर में भयावह परिस्थितियों से जूझ रहीं है। समाज में अभी भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के जानते हुए भी ख़मोश है तो इसमे भी उस के संस्कार है। बचपन से नारी को संस्कार के नाम पर त्याग, बलिदान, सहनशक्ति आदि का ज्ञान दिया जाता है। वह चाह कर भी खुलकर इस अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती है। लोकगीतों में कालांतर परिवर्तन आए हैं लोकगीतों में नारी ने अपनी वेदना को चेतना रुपी स्वर से प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध लोकसाहित्य कि विधा लोकगीतों से संबंधित है। शोध विषय का शीर्षक नारी चेतना के संदर्भ में लोकगीत है। इस शोध प्रबंध में लोक साहित्य एवं लोकसाहित्यिक विधाओं पर सत्यता एवं एकरूपता से अन्वेषण कर लेखन कार्य किया गया है। विषय अनुसार शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य नारी चेतना को दर्शाते हुए ब्रज लोकगीत हैं। विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन एवं क्षेत्रिय कार्य के आधार पर संकलित ब्रज लोकगीतों को प्रस्तुत किया है।

शोध प्रबंध को चार भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय को अ. और ब. भागों में बाटाँ गया है। अ. के अंतर्गत संबंधित शीर्षक के 'ब्रज' शब्द की व्युत्पत्ति, नामकरण की विस्तृत चर्चा

की गई है, साथ ही प्रमाणिक पुस्तकोंब में दिए गये संदर्भों के आधार पर 'ब्रज' की भौगोलिक सीमाओं को मानचित्र सहित प्रस्तुत किया गया है। ब. भाग में ब्रज भूमि कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य पर विस्तृत चर्चा की है। ब्रज भूमि कृष्ण भगवान की पावन भूमि है यहां के कण-कण में कृष्ण की भक्ति समायी है। ब्रज की ऐतिहासिकता को समय सीमा नहीं दर्शाया गया है लेकिन मुगल कालीन परिस्तिथियों का वर्णन सत्यपरकता के आधार पर किया गया है। सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य के अंतर्गत ब्रज के तीज-त्यौहार, मेले, पर्व आदि को व्यक्त करने के बाद ब्रज में धार्मिक गतिविधियों के बढ़ानेवाले अष्टछाप के कवि वल्लभाचार्य एवं उनके शिष्यों के योगदान को बताया गया है। इस पंथ के अन्य अनुयायीयों का भी संक्षिप्त चित्रण किया गया है। अंत में निष्कर्ष के तहत पूरे अध्याय का सार दिया गया है।

द्वितीय अध्याय को दो भागों में बाँटा गया है। अ. भाग का शीर्षक लोकसाहित्य का परिचय एवं वर्गीकरण है। इस भाग के अधीन लोकसाहित्य की आवधारणा और विभाजन, लोकसाहित्य की संस्कति एवं परंपरा जैसे बिंदुओं पर चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय के प्रथम भाग में लोक साहित्य की विभिन्न विधाएं लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकसुभाषित आदि का परिचय और उदाहरण सहित लेखन कार्य किया गया है। द्वितीय अध्याय के ब. भाग में ब्रज भाषा में रचित लोकसाहित्य के स्वरूप और विकास की चर्चा की गई है। लोकसाहित्य की भांति ब्रज लोकसाहित्य का विभाजन कर प्रत्येक विधा का उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है। इस शोध प्रबंध का मुख्य विषय लोकगीत है, इसलिए ब्रज लोकगीतों को केंद्र में रखकर अध्ययन किया गया है। लोकगीतों को विभाजित कर उन्हें उदाहरण सहित दिखाया गया है। अंत में निष्कर्ष के अंदर समग्र अध्याय का अवलोकन किया गया है।

तृतीय अध्याय में नारी चेतना से तात्पर्य पर विवेचन की गई है। इस अध्याय के अंतर्गत ब्रज लोकगीतों में नारी की पीड़ा, वेदना एवं यातनाओं से लिप्त गीतों को प्रस्तुत किया गया है। ब्रज लोकगीत और नारी, ब्रज लोकगीतों में चेतना का स्वर, ब्रज लोकगीतों में नारी अस्मिता का बोध

आदि बिंदुओं से संबंधित कुछ प्रकाशित एवं अप्रकाशित गीतों का संकलन कर प्रकाशित किया गया है। अंत में निष्कर्ष में समग्र अध्याय का सारांश दिया गया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत आधुनिक युग में लोकसाहित्य का अस्तित्व एवं भविष्य, लोकसाहित्य में पुनरावृति से बचाव एवं डिजिटल संकलन के साथ अन्य सुझावों का उल्लेख किया गया है। आज के युग में नवीन विषयों की श्रेणी में लोकसाहित्य उतना ही प्रभावशाली है जितने के अन्य विषय। अंत में लोकगीतकारों के साक्षात्कार को स्थान देकर अध्याय को सम्पन्न किया है। उपसंहार में समग्र शोध प्रबंध का अवलोकन कर लोकसाहित्य को नई दिशा देने का प्रयास किया गया है। अंत में सूचियों की श्रृंखला में परिशिष्ट के अधीन आधार ग्रंथ सूचि, संदर्भ ग्रंथ सूचि, पत्र-पत्रिकाएं, कोश का विवरण दिया गया है।

कृतज्ञता ज्ञापन एक औपचारिकता ही हो इसकी अनिवार्यता को नज़रअंदाज नहीं कर सकते है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में अपनी विशिष्टता एवं सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जानी जाती है। कृतज्ञता ज्ञापन का संस्कार भी हमें हमारे पूर्वजों से मिला है। इसी संस्कृति की परंपरा का निर्वहन करते हुए मेरे शोध प्रबंध को सम्पूर्ण करने में सहायता करनेवाले व्यक्तियों, संस्थाओं, पुस्त्कालयों, विभागों का मैं आभार व्यक्त करती

प्रस्तुत शोध प्रबंध पूर्ण होने जा रहा है यह मेरे लिए परम हर्ष और आनंद की बात है। मैं अपने गुरुजनों का आभार व्यक्त करती हुं जिनके सहयोग, समय पर सुझाव, एवं अशीर्वाद से आज मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने जा रहीं हूं। इस क्रम में सर्वप्रथम मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के कला संकाय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रध्यापक गण का आभार व्यक्त करती हूं। मेरी आदरणीय गुरु एवं निर्देशिका प्रोफेसर कल्पना गवली जी का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं। उन्होंने मेरी रुचि को आकार देकर मुझे लोकसाहित्य पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। तात्कालिन समय में विश्वविद्यालयों में लोकसाहित्य को लेकर उदासीनता देखने को मिलती है। शायद लोकसाहित्य को नवीन एवं आधुनिक विषय की श्रेणी में कम आँका जाता है। आधुनिक युग में लोकसाहित्य की प्रासंगिकता को सिध्द करना मेरा उद्देश्य है। मेरी निर्देशिका ने तमाम रुढ़िवादी विचारधाराओं का खंडन

कर मुझे उचित दिशा-निर्देश देकर मेरे शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में मेरी सहायता की जिसके लिए मैं आजीवन उनकी आभारी रहूंगी। मेरे शोध कार्य में विभाग के अध्यापक गण ने समय दर समय मुझे विषय संबंधी सामग्री, एवं कुशल मार्गदर्शन देकर मेरी सहायता की जिसके लिए मैं उनकी आभारी हूं।

जीवन में लक्ष्य नहीं वो जीवन व्यर्थ है। मानव अस्तित्व के लिए लक्ष्य और आकाक्षां जीवन के अहम मूल्य है। मैं अपने जीवन मे अथक परिश्रम कर शिक्षण क्षेत्र की इतनी ऊंचाई तक पहुंच सकी हूं। प्रस्तुत क्रम में अब मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों एवं मित्रों को करती हूं। सर्वप्रथम मैं अपने परमपुज्य माता-पिता का आभार व्यक्त करती हूं। मेरे पिता साबिर खान एवं माता फिरदोस साबिर खान के सहयोगात्मक आचरण के कारण मैं उन्हीं का स्वप्न साकार करने जा रही हुं। माता- पिता अपने बच्चों के जनने से उनके जीवन को सफल बनाने तक अनेकों बलिदान देते हैं। जिसके लिए मैं आजीवन इनकी ऋणी रहुंगी। अपना पूरा जीवन इनके चरणों में समर्पित करके भी मैं यह ऋण नहीं चुका पाऊंगी। प्रस्तुत शोध प्रबंध में ब्रज के गीत, लोकोक्ति मेरी माता द्वारा दी गई है। मेरे परिवार के सदस्यों में मैं अपने भाई-बहन निसा खान ने मेरी इस संघर्षशील यात्रा में कवच की भांति मेरा सहयोग दिया जिसके लिए मैं इनकी शुक्रगुजार हूं। आगे इस क्रम में मैं अपने पति तारीफ खान एवं ससुराल पक्ष की कृतज्ञाति हूं। मै अपनी पुत्री आयात खान का भी आभार व्यक्त करती हूं। शोध कार्य में सामग्री संकलन हेतु क्षेत्रिय कार्य के दरम्यान शिशु को घर पर छोड़कर कई बार मुझे क्षेत्र में उतरना पड़ा है। मेरी नज़र में यह एक कठिन क्षण था जिसमें आयत ने मेरा साथ दिया जिसके लिए मै उनका धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। मेरे सह शोधार्थी मित्रों में कृष्ण देव तिवारी, सुमन सरोज, बरखा वल्वी आदि के स्नेहपूर्ण सहयोग ने मुझे सामग्री मुहैया कराने में समय-समय पर मदद की और सही पथप्रदर्शित भी किया जिसके लिए मैं आप सभी की कृतज्ञाति हूं।

अंत में मैं सबसे महत्वपूर्ण हमारी संस्था महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा को धन्यावाद देना चाहती हूं। विश्वविद्यालय ने मेरे शोध प्रस्ताव को स्वीकार कर मुझे प्रस्तुत विषय पर शोध

कार्य करने की अनुमति दी जिसके लिए मैं संस्था की आभारी हूं। विश्वविद्यालय के हंसा मेहता पुस्तकालय को आभार देती हूं जिनकी सहायता से मुझे शोध संबंधी सामग्री, प्राचीन पुस्तकें, पत्रिकाएं उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान की। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरी सहायता के लिए मैं कृतज्ञ हूं। प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रयास में सभी महानुभवों की मदद से इस सफलता की अनुभूति हुई है।

सायमा अकरब साबिर खान

शोधार्थी- हिंदी विभाग

कला संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा.